प्रदूषणकी भयावहता

ज्योतिका महापर्व दीपावली आज पूरे देश और विदेशमें बसे भारतीय प्रवासी पूरे उल्लास और हर्षोल्लासके साथ मना रहे हैं। यह हिन्दुओंका प्रमुख त्योहार है जिसे प्रकाश पर्वके नामसे भी जाना जाता है। तमसो मां ज्योर्तिगमय इस पर्वका मूल भाव है। इस पर्वको बुराईपर अच्छाई, अज्ञानपर ज्ञान और अन्धेरेपर प्रकाशकी जीतका प्रतीक माना जाता है। इस पर्वपर रातभर पटाखे जलाये जाते हैं और आतिशबाजी भी जमकर की जाती है जिससे वायु प्रदूषण लगातार बढ़ता ही जा रहा है। शुद्ध वायु जीवनके लिए अत्यन्त आवश्यक है जो प्रदूषणके कारण प्राणघातक होता जा रहा है। पूरे विश्वमें वायु प्रदूषणकी भयावहताका सहज अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि प्रति वर्ष ८० लाखसे अधिक लोग असामायिक मौतोंके लिए वायु प्रदूषणके चलते उत्पन्न हुई बीमारियां जिम्मेदार हैं। वायु प्रदूषणके कारण अस्थमा, कैंसर, स्ट्रोक और फेफड़ेकी असाध्य बीमारियां होती हैं, जो लोगोंकी मृत्युका कारण बनती हैं। यह दुर्भाग्यकी बात है कि इसके बावजूद वायु प्रदूषण राष्ट्रीय मुद्दा नहीं बन पाया। वायु प्रदूषणके अनेक कारण हैं। बड़े-बड़े कल-कारखानों, वाहनोंसे निकलने वाला धुंआ जिससे भारी मात्रामें कार्बनका उत्सर्जन होता है जिसके कण हवामें मिलकर वायुको प्रदूषित करते हैं। सर्वोच्च न्यायालयने दिल्ली एनसीआरमें बार-बार पैदा हो रहे वायु प्रदूषणके संकटपर गम्भीर चिन्ता जतायी और वाहनोंसे होने वाले उत्सर्जनको वायुकी गुणवत्ता बिगाड़नेका बड़ा कारण बताया। अनेक अध्ययन भी यह स्वीकार कर चुके हैं कि वायु प्रदूषणमें वाहनोंके उत्सर्जनकी एक बड़ी भूमिका है। ट्रैफिक जाम भी एक बड़ी समस्या है, इससे वाहनोंकी रफ्तार थम जाती है और वे रेंगते हुए चलने लगते हैं और वे अधिक विषाक्त धुंआ छोड़ते हैं। ट्रैफिक जामका प्रमुख कारण सड़कोंपर अतिक्रमण है जिसे रोकनेमें जिला प्रशासन पूरी तरह विफल है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकान्त, न्यायमूर्ति जायमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहनाकी पीठने वायु प्रदूषणसे जुड़े नियामक ढांचेका पड़ताल सम्बन्धी मामलेकी सुनवाईके दौरान वाहनोंसे होने वाले प्रदूषणको नियंत्रित करने वाले उपायोंकी प्रभावशीलतापर सवाल उठाये। यह गम्भीर चिन्ताकी बात है कि इतने उपायोंके बावजूद एक्यूआई ४०० तक पहुंच रहा है। वायु प्रदूषणकी यह स्थिति केवल दिल्ली एनसीआरतक ही सीमित नहीं है, बल्कि अब तो उत्तर भारतके छोटे शहर भी प्रदूषणकी चपेटमें हैं। इसलिए अब जरूरी है कि इसपर नियंत्रणके लिए सख्त और प्रभावी कदम उठाया जाय।

सुप्रीम फैसला

आरक्षणका उद्देश्य केवल कुछ वर्गोंको सुविधा देना नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक रूपसे वंचित समुदायोंको समान अवसर उपलब्ध कराना है। ऐसेमें आरक्षणके लाभार्थियोंकी पात्रता तय करनेके मानदण्ड भी संविधानकी मूल भावना और सामाजिक न्यायके सिद्धान्तोंके अनुरूप होना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालयका यह स्पष्ट कहना कि सार्वजनिक क्षेत्रके उपक्रमों और निजी क्षेत्रमें कार्यरत माता-पिताके वेतन या आयके आधारपर उनके बच्चोंको क्रीमीलेयरमें नहीं रखा जा सकता। न्यायालयने ११ मार्च, २०२६ के अपने फैसलेको दोहराते हुए स्पष्ट किया है कि माता-पिताके पद, सेवाकी स्थिति और श्रेणीके साथ-साथ अन्य निर्धारित मानकोंपर भी विचार करना आवश्यक है। विशेष रूपसे सार्वजनिक क्षेत्रके उपक्रमों और निजी क्षेत्रमें कार्यरत कर्मचारियोंके मामलेमें सरकारी सेवाके समकक्ष पद और स्थितिका आकलन किये बिना केवल वेतनको आधार बनाना उचित नहीं है। यह फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि क्रीमीलेयरकी अवधारणाका उद्देश्य आरक्षणका लाभ उन लोगोंतक पहुंचाना है, जिन्हें वास्तवमें इसकी आवश्यकता है, लेकिन इस प्रक्रियामें आर्थिक स्थिति और सामाजिक-प्रशासनिक हैसियतके बीच अन्तर करना जरूरी है। समान वेतन पाने वाले दो व्यक्तियोंकी सामाजिक और सेवा सम्बन्धी स्थिति एक जैसी हो, यह आवश्यक नहीं, इसलिए केवल आयको निर्णायक मानना आरक्षणके मूल उद्देश्यको प्रभावित कर सकता है। न्यायालयका यह फैसला सरकारके लिए भी स्पष्ट सन्देश है कि आरक्षणसे सम्बन्धित नीतियां बनाते समय संवैधानिक सिद्धान्तों और न्यायिक दिशा-निर्देशोंके अनुरूप होनी चाहिए। इसके लिए विभन्न सेवाओंके पदोंकी समयकक्षता निर्धारित करना और सम्बन्धित पक्षोंसे विचार-विमर्श करना आवश्यक है। सामाजिक न्याय केवल नियम बना देनेसे सुनिश्चित नहीं होता, बल्कि उसके निष्पक्ष क्रियान्वयनसे होता है। आरक्षणकी पात्रता तय करनेमें न तो किसी अपात्रको अनुचित लाभ मिलना चाहिए और न ही किसी वास्तविक पात्रको केवल वेतनके आधारपर अधिकारोंसे वंचित किया जाना चाहिए। सरकारको अब स्पष्ट और पारदर्शी मानदण्ड तैयार करना चाहिए, ताकि आरक्षणका लाभ पात्रोंतक पहुंचे और सामाजिक न्यायकी संवैधानिक भावना बनी रहे।

लोक संवाद

जलते गंगा-जमुनी तहजीबके दीप

महोदय,-दीपावलीकी भरपूर छटा देखनी हो तो गंगा-जमुनी तहजीबके दयारेमें आना चाहिए। अवधमें जहां यह सूफी संतोंकी दरगाहोंमें सबसे अधिक नजर आती है। खासकर विश्वप्रसिद्ध देवा शरीफ और किछौछा शरीफमें। देवा शरीफ उत्तर प्रदेशकी वर्तमान और अवधकी पुरानी राजधानी लखनऊसे बयालीस किलोमीटर तथा अवधका हृदय कहलाने वाले बारावंकी जिलेके मुख्यालयसे महज बारह किलोमीटरकी दूरीपर स्थित है, जबकि किछौछा शरीफ फैजाबाद जिलेको विभाजित करके बनाये गये अंबेडकरनगर जिलेमें स्थित है। देवा शरीफकी सीख है कि दीनको मानकर जो झगड़े होते हैं, वे दीनको जानकर नहीं होते। इस दरगाहमें दीपावलीपर 'जो रब है वही राम है' के नारोंके बीच दीये जलाकर जश्न-ए-चरागां मनाया जाने लगता है तो किसीको भी अपना हिन्दू, सिख या मुसलमान वगैरह होना याद नहीं रह जाता! इस अवसरपर देशके विभिन्न हिस्सोंसे यहां आये विभिन्न धर्मों, बोलियों और भाषाओंके अनुयायी लौटते समय अपने साथ और कुछ ले जायं या नहीं, अनेकतामें एकता, शांति और सौहार्दके संदेश जरूर ले जाते हैं। यह दरगाह अवधके अपने समयके जाने-माने सूफी संत हाजी वारिस अली शाहकी कर्मस्थली है, जिन्हें वारिस सरकारके नामसे भी जाना जाता है। दरगाहके दरवाजेको 'कौमी एकताका दर' कहा जाता है। यहां कौमी एकताको बढ़ावा देने वाले नारे लगाये जाते हैं। कई लोग इसकी परम्पराओंको अवधके नवाबों, खासकर नवाब वाजिद अली शाह और उनकी बेगम हजरत महल द्वारा पाली-पोसी जाती रही उस तहजीबसे भी जोड़ते हैं, जिसमें भेदभावके लिए कोई जगह नहीं रही। कहा जाता है कि गंगा-यमुनाके इलाकोंमें इस तहजीबको जिन लोगोंने पाला-पोसा, उसे आगे बढ़ानेका काम मुख्यतः सूफी संतोंने ही किया। अवधमें ऐसे कई सूफी संतोंकी जन्मस्थलियां ओर साधनास्थलियां स्थित हैं। इनमें मलिक मुहम्मद जायसीका नाम भी उल्लेखनीय है। जैसा कि उनके नामसे ही जाहिर है, उनका जन्म जायसमें हुआ था। दीपावलीके दिनसे शुरू होने वाला किछौछ शरीफ मेला चालीस दिनोंतक चलता है और 'अगहन मेला' कहलाता है। इसमें देशके प्रायः हर कोने से लोग आते हैं। चाहे शहरी हों या ग्रामीण। इस मेलेमें दीपावली और एकादशीके अलावा बृहस्पतिवारके दिनको भी विशेष महत्व दिया जाता है। दीपावली की रात दरगाह स्थित 'नीर शरीफ' (सरोवर) के तटपर मोमबत्तियां और घीके दीये रोशन किये जाते हैं तथा दरगाह परिसरको खुशबूदार अगरबत्तियोंसे सुवासित किया जाता है। इस दीपोत्सवको अगहन मेलेका असली तेवर कहा जाता है। इस अवसरपर छोटे बच्चोंका मुंडन भी करवाया जाता है। गुस्ल मुबारकका दो दिवसीय मेला इस मेलेसे अलग होता है। संत मखदूम अशरफ जहांगीर सिमनानीके बारेमें कहा जाता है कि उनका जन्म ईरानके सिमनान प्रांतमें हुआ था और वे मात्र तेरह वर्षकी उम्रमें ही वहांके शासक बन गये थे। लेकिन राजकाजमें उनका मन नहीं लगा तो उन्होंने गद्दी छोटे भाईको सौंप दी और फकीरीकी राहपर चल पड़े। दुनियाभरमें सूफी मतका प्रचार करते हुए वे भारत आये और किछौछा पहुंचे तो वहींके होकर रह गये। दरगाहका सालाना उर्स मेला मोहर्रम महीनेकी पचीसवींसे अट्ठाइसवीं तारीखतक चलता है। रजबके महीनेमें लगने वाले दो सप्ताहके अजमेरी मेलेका भी अलग ही आकर्षण होता है। इसमें अजमेर शरीफ जाने वाले जायरीन अपनी रवानगीसे पहले यहां हाजिरी देकर संतकी दुआ लेते हैं। इतना ही नहीं, हर महीनेके पहले बृहस्पतिवारको नौचंदी मेला लगता है, जिसे मासिक मेला भी कहते हैं। **-कृष्ण प्रताप शर्मा, वाया ईमेल।**

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है दीपोत्सव

प्रकाश सामान्य पदार्थ नहीं है। सृष्टिके आदिकालसे मनुष्य प्रकाशका प्यासा है। वैदिक ऋषियोंने तमसो मा ज्योतिर्गमयके स्तुतिवाचन किये हैं। प्रकृतिमें प्रकाशके अनेक स्रोत हैं। मेरे मनमें बार-बार आता है कि सूर्य प्रति दिवस नियत समय उगकर हम सबका कुशलक्षेम जाननेके लिए ही आते हैं।

❐ हृदयनारायण दीक्षित

प्रकाशके अनेक रूप हैं। प्रकाशके एक रूप सूर्य हैं। प्रकाश दिव्यता है। जहां-जहां दिव्यता है, वहां-वहां देवता। भारतीय चिन्तनमें प्रकाश और ज्ञान पर्यायवाची हैं। इसीलिए प्रकाशदाता सूर्य उपास्य देवता हैं। ऋग्वेदके एक मंत्रमें सूर्य-सवितासे प्रकाशके वरणकी प्रार्थना की गयी है-तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। अग्नि भी प्रकाशदाता हैं। ऋग्वेदमें उन्हें कवि और परम विद्वान बताया गया है। लेकिन सूर्यकी बात दूसरी है। वे आत्मसंयमी कर्मठ देवता हैं। सूर्य लाखों वर्षोंसे लगातार तप रहे हैं। सोचता हूं कि उनका ईंधन कबतक जलेगा। प्रकाशके लिए ईंधनकी आवश्यकता होती ही है। प्रकाशदाता सूर्य जब आते हैं, तब ऊषा कहलाते हैं। जाते हैं तो प्रकाश और अंधकारके मिलन बिन्दुको संध्या कहते हैं। हमारे पूर्वजोंने अंधकारसे भरी पूरी अमावस्याको प्रकाशसे भर दिया। प्रकाश उत्सव मनानेके लिए दीप प्रतीक बनाया गया। दीप भारतके सांस्कृतिक मनकी खूबसूरत धारणा है। प्रकाश है तो भारतका मन मनोरम होगा ही। मेरे लेखे प्रकाशमें गंध भी होती होगी। प्रकाशमें सात रंग होते हैं। सात दिन होते हैं। ध्वनिमें सात सुर होते हैं। दीपावलीकी रात सात सुर, सात रंग सब एक साथ समवेत होते हैं।



प्रकाश रस या गंध अति सूक्ष्मतर है। सूक्ष्म सुन्दर होता भी है। जान पड़ता है कि प्रकृतिका सारा सौन्दर्य, आभा, प्रभा, सुगंध या सरस मधुमय चेतन सूक्ष्म ही है। यहां संग्रही लोगोंके लिए कोई सुविधा नहीं। ऐसे प्रयासमें चेतन फिसल जाता है और मृत काया ही हाथ आती है। तोता मैना या गीत गाता कोई सुन्दर पक्षी मन भावन होता है। अपने साथ लायी तो गीत छूट जाते हैं, सौन्दर्य फिसल जाता है। प्राणी आता है, प्राणोंका छन्द खो जाता है। लेकिन दीप प्राणमय है। दीप हमारे पूर्वजोंकी कृति है। प्रकृति नहीं सुकृति। इसलिए संस्कृति।

मैं विश्वासपूर्वक प्रकाशको गंधपूर्ण नहीं कह सकता। लेकिन दीपावलीके महापर्वमें भारतका मन सुगंधसे भर जाता है। अंग्रेजीके प्रतिष्ठित कवि शेलीने प्रकाश गंधका उल्लेख किया है। उन्होंने एडोनिस नामकी कवितामें कहा है कि 'ब्रेन स्प्लेंडर इज चेंज्ड टू फ्रेगरेंस-जब प्रकाशकी आभा गंधमें बदल जाती है, तब जैसे नक्षत्रोंने अपना रूप बदल लिया है फूलोंमें।' यहां नक्षत्रकी आभाका रूपांतरण हो गया है और प्रकाश गंध बन गया है। दीप प्रकाशमें भी गंध है। लेकिन थोड़ा अंतर जान पड़ता है। प्रकाश अक्षुण्ण है और प्रकाशमें भी गंध होती है। हम भारतवासियोंको प्रकाश गंधका अनुभव भले ही न हो, लेकिन दीपोत्सवकी गंधसे सारा भारत मदमस्त रहता है। भारतका मन संस्कृतिसे बना है और संस्कृति भारतके मनसे बनी है। हम भारतवासी हजारों वर्षोंसे दीपरसके प्यासे हैं।

प्रकाश रस या गंध अति सूक्ष्मतर है। सूक्ष्म सुन्दर होता भी है। सुन्दरता भी सूक्ष्म ही है। जान पड़ता है कि प्रकृतिका सारा सौन्दर्य, आभा, प्रभा, सुगंध या सरस मधुमय चेतन सूक्ष्म ही है। यहां संग्रही लोगोंके लिए कोई सुविधा नहीं। सूक्ष्मका संग्रह असंभव है। ऐसे प्रयासमें चेतन फिसल जाता है और मृत काया ही हाथ आती है। तोता मैना या गीत गाता कोई सुन्दर पक्षी मन भावन होता है। अपने साथ लाइ तो गीत छूट जाते हैं, सौन्दर्य फिसल जाता है। प्राणी आता है, प्राणोंका छन्द खो जाता है। लेकिन दीप प्राणमय है। दीप हमारे पूर्वजोंकी कृति है। प्रकृति नहीं सुकृति। इसलिए संस्कृति। तुलसी दास मध्यकालीन महाकवि हैं। रामचरित मानसके उत्तरकाण्ड वाला ज्ञानदीपकका प्रसंग गानेका मन करता है।

विज्ञान दीप है यह। यहां योगकी अग्नि है ज्ञानका घृतरस है। बुद्धि विज्ञानरूपिणी है। तीन गुणोंसे युक्त कपासकी बाती है लेकिन इसे बनानेमें चित्तकी तुरी-अवस्थाका प्रयोग किया गया है-तूल तुरीय संवारि पुनि बाती करै सुगाणि। फिर समताका दिया है। दीपककी लौमें 'सो अहं अस्मि'-(मैं सम्पूर्णताका अंश हूं) की वृत्ति है। ऐसेमें बने दीपककी प्रकाशधारा 'दीपशिखा सोई परम प्रचण्डा' है। तुलसीके मानसका यह दीप भारतीय अन्तःप्रज्ञा और दर्शनका प्रतिनिधि है। मानसकी यह पंक्तियां झमाझम प्रकाश देती है। दुनियाके सभी दर्शनवेत्ताओंको इन्हें ध्यानसे पढ़ना चाहिए।

ज्योति राग हजारों बरससे भारतीय मनकी प्यास है। यह प्यास असाधारण है। साधारण प्यास जलरस पीकर शान्त हो जाती है। ज्योति प्यास पीकर-पाकर और भी बढ़ती है। संत कवियोंने 'ज्योतिसे ज्योति जलाने' की देशना दी है। बुद्धने सीधी मर्मभरी बात कही-'अप्प दीपो भव'। स्वयं दीप बनो। सच भी है। हमारे चित्तका तमस भीतरके दीप प्रज्जवलनसे ही जायगा। महादेवीके काव्यमें भी प्रकाश बेचैनी है। विश्वकवित रवीन्द्रनाथ टैगोरने सीधा दीप-बिम्ब रचा। गाया है 'सूर्य अस्तांचलकी ओर चले। ठिठके। अब प्रकाशका क्या होगा। नन्हें दीपने अंगड़ाई ली। कहा, आप विश्राम करो। मैं तमससे लडूंगा। दूंगा प्रकाशदीप्ति।'

सुनते आये हैं कि वैदिक देवोंको आजकी तरहके विशेषाधिकार नहीं थे। वे अपने भक्तोंको नियमविरुद्ध सहायता नहीं कर सकते थे। ऋग्वेदमें उदात्त घोषणा है कि कर्म आलसीकी सहायता देवता भी नहीं करते। वरुण नियमोंका पालन कराने वाले देव हैं। हल उन्हें भी जोतना है। हमारे पूर्वज भी सुगंध प्रिय ही थे। वे त्र्यंबक देवसे स्तुति करते हैं और उन्हें सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनम् बताते हैं। प्रकाश और गंधकी प्यास अनूठी है। भारतीय संस्कृतिमें प्रकाशवाची शब्दोंकी भरमार है। 'भा' का अर्थ है प्रकाश। प्रकाश परम है। हम सबके भीतर वही प्रकाश उगे तो प्रतिभा। उपनिषद्में कहते हैं 'वहां न सूर्य चमकता है, न चन्द्र या तारागण। सब उसी एक प्रकाशसे प्रकाशित हैं।' उसका प्रकाश भा। भा की अनुकम्पासे प्रतिभा। आभा और प्रभा भी। हम सब भी भा-रत हैं। भारत यानी प्रकाशरत ज्योर्तिमय राष्ट्रीयता। अर्जुनको श्रीकृष्णका प्रबोधन मिला। उसे प्रकाश मिला। साधारण प्रकाश नहीं, दिव्य सूर्य सहस्त्राणि। तब हजारों सूर्य एक साथ दीप्तिवान हो गये।

हमारे इन्द्रियबोधकी सीमा है। कवि शेलीके मनमें तारोंके फूल बननेकी बात यूं ही नहीं आयी होगी। शापेन हावर भारतीय दर्शनसे परिचित थे। यूनानी दर्शनके अनेक निष्कर्ष प्राचीन उपनिषद् वाक्योंसे मिलते हैं। भारतके व्यापारी, विद्वान दुनिया घूम रहे थे। उनकी ज्ञानगंधका संस्पर्श यूनानी विद्वानोंको भी मिला हो तो आश्चर्य क्या है। हिराक्लिटस्के ऊष्मा सम्बंधी विचार कठोपनिषद्के अग्नि प्रकरणसे मिलते हैं। थेल्सके जल सम्बन्धी विचार ऋग्वेदके 'आपः मातरम्' की अनुगूंज जान पड़ते हैं। प्रकाशकी दीप्तिका गंध रस बनना भौतिक विज्ञानके लिए शोधका विषय है लेकिन ऋग्वेद या उपनिषद् बोधमें ऐसी बाते सरल एवं सहज हैं। ऋग्वेदके एक मंत्रमें इन्द्रको ही सभी रूपोंमें रूप प्रतिरूप गाया गया है। उपनिषदोंमें अग्नि या वायुको भी सर्वत्र रूप प्रतिरूप देखा गया है। 'वह एक' ही अनेक रूपोंमें प्रत्यक्ष है। वही प्रकाश आभा है और वही सुगंधि। वही रस पूर्ण समग्रता है।

अंतर्मनमें प्रकाश प्राकट्यका उत्सव

उमंग, उल्लास, हर्ष और उत्साहका पर्व है दीपावली। आत्मा नकारात्मकताको छोड़कर सकारात्मकताको अपनाती है। अंतर्मनमें अंधकारका निर्वासन और प्रकाशका प्राकट्य होता है। वास्तविक उत्सव यही है।

❐ प्रवीण दत्त

दीपावली पर्वसे कई धारणाएं और मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। सुखद आश्चर्य है कि दिवालीका जिक्र सतयुगमें है, त्रेतामें भी है, द्वापरमें भी और कलियुगकी कथाओंमें भी। कठोपनिषद्में यम-नचिकेताका प्रसंग आता है। कहा जाता है कि नचिकेता यमलोक गये थे और धर्मराजसे जीवन-मृत्युका रहस्य पता करनेके बाद, मृत्युको जीतकर वापस संसारमें लौटे थे। उनके यमलोकसे आनेकी खुशीमें लोगोंने घीके दिये जलाये थे। माना जाता है कि दीपावली मनाने और दिये जलानेकी परम्परा इसी घटनासे आरम्भ हुई। एक अन्य गाथाके मुताबिक इसी दिन समुद्रमंथनसे देवी महालक्ष्मीका प्रादुर्भाव हुआ था। किंवदंतीके अनुसार ऋषि दुर्वासा जीके श्रापके कारण श्रीलक्ष्मी जीको समुद्रमें समाना पड़ गया था। संसारके लक्ष्मीविहीन होनेपर असुरोंने सुरोंपर आक्रमण कर दिया और आध्यात्मिक गतिविधियोंको छिन्न-भिन्न कर दिया। इससे संपूर्ण विश्वपर संकट आ था। घबराये देवगणोंने श्रीहरिसे याचना की। तब श्रीहरि विष्णुने समुद्रमंथन करवानेकी योजना बनाई। समुद्रमंथनसे चौदहवें रत्नके रूपमें श्रीलक्ष्मी निकलीं, जिनको श्रीविष्णुने ग्रहण किया। लक्ष्मी जीके प्रकट होनेपर देवता, बल एवं तेजयुक्त हो गये और उन्होंने असुरोंका सर्वनाश कर दिया। लक्ष्मी जीके पुनः अवतरणकी इस घटनापर समस्त लोकोंमें दीपमलिका प्रज्वलित की गयी। इस प्रकारसे दीपावलीका आरम्भ हुआ।

दीपावलीके दिन ही भगवान कृष्णने प्रथम बार गाय चराकर, लोगोंको गोसेवा करनेका संदेश दिया था। पौराणिक गाथाओंके अलावा दीपावलीके साथ कुछ ऐतिहासिक घटनाएं भी जुड़ी हैं, जो इस पर्वका महत्व और बढ़ाती हैं। दीपावलीके दिन ही आर्य समाजके प्रवर्तक स्वामी दयानंद और जैन धर्मके प्रमुख तीर्थंकर महावीर जीको निर्वाण प्राप्त हुआ था। अपने कार्योंसे विश्वको अभिभूत करने वाले महान संत स्वामी रामतीर्थका जन्म और मृत्युका अनूठा संयोग भी दिवालीपर ही हुआ था। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण द्वारा लोककल्याण हेतु गोवर्धन पर्वत धारण करने, भाई दूजपर यम द्वारा अपनी बहन यमुनासे मिलने और महाराज विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी संवत्का आरंभ करनेकी कथाएं भी दिवालीसे जुड़ी हैं। दिवालीसे जुड़ी आध्यात्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएं अनंत हैं। इन अनंत कथाओंके कारण ही दीपावली सभी वर्गोंमें लोकप्रिय है। लेकिन दीपावलीका केन्द्र बिन्दु हैं-श्रीराम।

वास्तवमें दीपावली यदि जन-जनका त्योहार है तो उसका कारण हैं-श्रीराम। दीपावलीसे पूर्व रामलीलाओं-रामकथाओंके आयोजनोंकी परम्परासे ही जनमानसमें दीपावलीके प्रति उमंग जगती है। सही अर्थोंमें दीपावली संदेश देती है-भगवान रामके जीवनका अनुकरण करने और उनके संदेशोंको आत्मसात कर, आत्माको परमात्मा बनानेका। रावण द्वारा सीताहरण किये जानेके बाद श्रीराम चाहते तो रावणको कहींसे भी ढूंढ़ निकालकर दंडित कर सकते थे। यह उन जैसे महामानवके लिए कोई दुष्कर कार्य नहीं था। लेकिन उन्होंने संसारकी मर्यादाओंका पालन करते हुए, वानर जैसे छोटेसे छोटे चरित्रोंकी सहायतासे जिस संयमसे इस पूरी लीलाको पूर्णता प्रदान की, वह अनूठी है। हनुमान, सुग्रीव, अंगद, विभीषणके प्रति आत्मीयता और उन्हें सम्मान देनेकी श्रीरामकी प्रवृत्ति अनुकरणीय है। आज हम देखते हैं कि थोड़ा-सा वैभव, बल और थोड़ी-सी विद्या पाते ही मनुष्य अहंकारी हो जाता है और निर्बलोंपर अत्याचार करने लगता है। भगवान राम हमें प्रेरणा देते हैं कि अहंकार रहित होकर और सभी मर्यादाओंका पालन करनेमें ही मानवका कल्याण निहित है। इसलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा गया है। रामायणमें उल्लेखित एक-एक प्रसंग हमारी धरोहर है, जिसे आत्मसात कर हम अंधकार, अहंकार और अनिश्चयकी स्थितिसे निकल सकते हैं। दीपावली राह दिखाती है कि जिस तरह उच्च मूल्योंकी स्थापना करते हुए श्रीरामने रावणपर विजय प्राप्त की, उसी प्रकार हम भी अपने अंतर्मनमें स्थायी रूपसे बैठे दुर्विचारोंको नष्ट कर अपनी आत्माको दीपमलिकासे जगमग कर सकते हैं।

दीपावली दरअसल आत्मशुद्धिका पर्व है। जबतक हमारा मन शुद्ध नहीं होगा, जबतक हमारा वातावरण शुद्ध नहीं होगा। सामाजिक बुराइयोंके प्रति जबतक हम जागरूक नहीं होंगे, हमारे कुविचारोंका मैल जबतक नहीं धुलेगा, तबतक दिवाली मनाना, बेमानी होगा। बिना स्वच्छता, बिना प्रकाश कैसी दिवाली और बिना दिवाली कैसा जीवन। वास्तवमें दिवाली हर प्रकारके अंधकारको नष्ट करनेका पर्व है। इस पर्वपर घरको साफसुथरा करनेकी परम्परा है, दीप एवं आतिशबाजीके माध्यमसे अंधकारको जीवनसे भगाने और मनको आलोकित करनेकी परम्परा है। हम इन सभी उपक्रमोंके जरिये सांस्कृतिक परम्पराएं तो निभा लेते हैं, लेकिन भूल जाते हैं कि हमारी संस्कृतिमें दीपावलीका एक अर्थ हमारे परिवेशकी स्वच्छता भी है। स्वच्छता एक सकारात्मक शक्ति पुंज है, जो हमें बाहर और भीतर दोनों ओरसे महकाती है। यदि हम केवल दिखावेके लिए झाड़ू हाथमें लेकर खड़े हो जाते हैं और सफाई-कर्म हमारे घरतक ही सीमित रखते हैं। तब हम दिवालीके महत्वको नष्ट करते हैं। प्रवृत्तिमें सार्थक बदलाव ही दीप पर्वका वास्तविक अर्थ है। यह बदलाव यदि हम ला सके तो इसे जीवनका चरमोत्कर्ष कहा जायगा। इन दिनों सोशल मीडियामें एक संदेश सामने आ रहा है कि मीडिया और पर्यावरणके रखवालोंको पर्यावरण बचानेकी याद हमारे त्योहारोंपर ही आती है। जमकर पटाखे छुड़ाओ। स्वच्छता और पर्यावरण बचानेके लिए बाकीके ३६४ दिन हैं। इस प्रकारकी सोच हमारे समाजके लिए घातक है। 'जमकर पटाखे छुड़ायें' एक नकारात्मक संदेश है, क्योंकि पटाखोंसे उत्पन्न, प्रदूषण हमारी सफाई व्यवस्थाको नुकसान पहुंचाता है। इससे हिंदू, मुसलमान नहीं, संपूर्ण समाज प्रभावित होता है। ऐसे संदेशोंको फैलाने और अमलमें लानेसे बचें। दरअसल इन नकारात्मक विचारों और संदेशोंपर विजय पाना भी दिवाली मनानेका मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। ओशो कहते हैं-आदमी एक अंधेरा है। आदमी है अमावसकी रात और दिवाली तुम बाहर कितनी ही मनाओ, भीतरका अंधेरा बाहरके दीयोंसे कटता नहीं, कटेगा नहीं। हमारी सारी जीवन ऊर्जा बाहरकी तरफ यात्रा कर रही है। यह ऊर्जा भीतरकी तरफ लौटे तो यही ऊर्जा प्रकाश बनेगी। आइये इस दिवाली हम भी संकल्प लें कि छलावायुक्त बाहरी आवरणको छोड़कर अपने अंतसको उजालेसे भरेंगे। जीवनको आनन्दमय करेंगे, समाजको अपने कार्यकलापोंसे सुख देंगे। दीप जलायंगे और उत्साहित होंगे। बुद्ध, महावीर, स्वामी रामतीर्थकी तरह अपने जीवनको चरमोत्कर्ष प्रदान करेंगे। तभी दिवालीकी सार्थकता सिद्ध होगी।



दीपावलीका सन्देश

❐ यशपाल कुमार

कार्तिक मासकी अमावस्याको पूरे भारतमें दीपावलीका उत्सव मनाया जाता है और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली मां भगवतीकी आराधना की जाती है। इस विषयमें एक कथा प्रसिद्ध है। वामन भगवाननें त्रिलोकाधिपति राजा बलिके दरबारमें तीन पग पृथ्वीकी याचना की और दो पगमें सम्पूर्ण पृथ्वी-स्वर्गको नाप लिया एवं तीसरे पगसे असुरेश्वर राजा बलिके सम्पूर्ण शरीरको भी नाप लिया। इसपर बलिकी पत्नीकी प्रार्थना समर्पण एवं बलिकी शालीनतासे प्रसन्न होकर वामन भगवानने बलिको वर मांगनेको कहा। इसपर राजा बलिने कहा कि आज कार्तिक अमावस्या है आज ही आपने समस्त ब्रह्माण्डको दो पगोंमें नापकर अपनी प्रभुताका परिचय दिया है। अतएव यही वरदान दीजिये कि आजके दिन जो दीपोंकी मालासे अपने घरका जगमगायें, वह हमेशा सुखी और सम्पन्न रहे और मां भगवती उन्हें कभी न छोड़ें। भगवाननें उन्हें कहा-तथास्तु! भक्तिपूर्वक श्री सूक्तका जप करने वाले पुण्यशाली लोगोंको न क्रोध होता है, न ईर्ष्या होती है, न लोभ ग्रसित कर सकता है और न ही उनकी बुद्धि दूषित होती है। जगतमें लक्ष्मी सम्पन्न अनेक लोग हैं लेकिन श्रीयुक्त लक्ष्मीसे सम्पन्न विरले ही महापुरुष, सन्त, विद्वतजन, श्रीयुक्त नारियां हैं एवं आगे भी रहेंगी, उनके अन्तस्में श्रीकी ज्योति सदा जगमग करती है, उनके नेत्र भगवत् प्रेमसे सदा सजल रहते हैं। धर्मात्मा पुरुषोंके द्वारा ही निरभिमान, निःस्वार्थ भावसे विद्यालय, अन्न क्षेत्र, चिकित्सालय, धर्मशालाएं, कुण्ड, कूप, सरोवर, अनेक-अनेक सुकृत होते हैं, जिनसे हम जन-सामान्य लाभान्वित होते हैं। धर्मात्मा अपनेको भगवान श्रीनारायण, भगवती महालक्ष्मीका सेवक, न्यासी मानकर जन मनको सुखी करते हैं। उनके जीवनमें श्रीका अवतरण स्पष्ट दीखता है। नीतिकार कहते हैं कि धर्म एवं उद्यमसे लक्ष्मी प्रकट होती हैं, गऊ, विप्र, बड़े-बूढ़ों, जरूरत मन्दोंकी निराभिमानता पूर्वक सेवासे प्रसन्न होती हैं एवं परोपकारसे चतुर्दिक लहलहाने लगती है। दीप ज्योति हमें यही संदेश देती है कि श्रद्धापूर्वक दीपका नमन करनेसे हमारे मन मंदिरमें परम ब्रह्म महालक्ष्मीकी ज्योति प्रकाशित हो जाती है। गुरुजन बताते हैं- नित्य प्रातः सायं दीप ज्योति प्रकाशित करनेसे दीप ज्योतिको नमन करनेसे जीवनकी दिशा-दशा बदलती है। उद्यमशीलताकी प्रवृत्ति बढ़ती है और मानवके अन्दर संयम निर्लोभता प्रेम उदारता शान्ति आदि सद्गुणोंका प्रकाश होता है। उसके यहां सन्मतिका प्रकाश फैलने लगता है। ऐसा व्यक्ति सबके प्रति स्नेहशील होता है। महालक्ष्मी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती और जीवनके अन्तमें वह निर्वाणको भी प्राप्त करता है। दीपावलीका यही संदेश है कि हर जन-मन प्रभुकी ज्योतिसे प्रकाशित हो, हर व्यक्ति विद्या विनयसे युक्त हो, हर व्यक्ति एक-दूसरेका सहयोगी बने, हर व्यक्ति संयमी बने, निरोगी रहे, सुखी- चिरायु रहे, सर्वत्र सुख शान्ति माधुर्यका उदारताका प्रकाश हो।

वैश्विक क्षितिजपर बिखरता ज्योतिर्मय स्वरूप

❐ रमा निवास तिवारी

दीपावलीकी शाम अयोध्या किस खूबसूरत दुशालाको ओढ़कर सनातनियोंके सामने प्रकट होगी, इसका अंदाजा उन्हें जरूर हो गया होगा जिन लोगोंने दीपोत्सवकी शुरुआतसे दस वर्षोंकी उसकी यात्रापर अपनी नजरें बनाये रखीं थीं। दीपोत्सवके इस पूरे दशकमें अयोध्या मगन रही। कारण साफ था, इस दौरान अयोध्याको उसकी महिमा, गरिमा और गुरुताके हिसाबसे मान-सम्मान देनेकी सरकारकी प्रतिबद्धता नजर आयी। चौदह वर्षोंके वनवाससे प्रभु श्रीरामके लौटनेके बाद अयोध्या जिस तरह खिलखिलायी थी, कलियुगमें उसी त्रेतायुगको उतारनेकी कोशिश दीपोत्सवके जरिये मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथने की है। हर साल उल्लास और उमंगमें डूबी अयोध्या अपने बीते बरसोंके दीपोत्सवसे ज